ISSN: 2321-8819 (Online) 2348-7186 (Print) Impact Factor: 1.498 Vol. 5, Issue 6, June 2017

आँगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिकाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (नैनीताल जिले के विकासखण्ड रामनगर के विशेष सन्दर्भ में)

नाजिया बानो
शोधार्थिनी समाजशास्त्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय
नैनीताल (उत्तराखण्ड)

सार: आज विश्व में नारी मुक्ति आन्दोलन का प्रभाव क्षेत्र में व्यापक हो गया है। आर्थिक दृष्टि से महिलायें आगे बढ़ रही हैं। परन्तु बढ़ते औद्योगिकीकरण, भूमण्डलीकरण के पश्चात भी महिलाओं के भाग्य परिवारों के हाथों निहित हैं। केन्द्रों में महिलाओं का सम्बन्ध निम्न वर्ग से होता है। केन्द्रों के कार्य के साथ–साथ घरेलू कार्यों में भी उनकी अहम भूमिका होती है। केन्द्रों एवं घरेलू कार्यों के बीच संघर्षपूर्ण अपने दायित्वों को पूर्ण करने हेतु तत्पर रही हैं तथा कार्यकत्रियों को केन्द्र एवं घर दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है। प्रस्तुत शोध आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत महिला कार्यकत्रियों की दोहरी भूमिकाओं के अध्ययन पर आधारित है।

पारिभाषिक शब्द : सामाजिक स्थिति, कामकाजी महिला

प्रस्तावना : बदलते परिवेश ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है। उनके सम्मान में वृद्धि भी हुई है। परन्तु आज भी उनकी स्थिति असमंजस में है। आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्य करने के साथ–साथ महिलाओं की घरेलू ज़िम्मेदारी, खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी कार्यकत्रियों एवं महिलाओं को स्वयं करना पड़ता है। घरेलू महिलाओं की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं पर कार्य का बोझ अधिक होता है। इन महिलाओं को अपने कार्य क्षेत्र और घर दोनों को संभालने में अत्यधिक कार्य करना पड़ता है। 'कारोबारी संगठन एसोचेम' द्वारा किए गये सर्वे के अनुसार ''माँ बनने के बाद अत्यधिक महिलायें नौकरी छोड़ देती हैं तथा 40 प्रतिशत महिलायें अपने बच्चों को पालने हेतु यह निर्णय लेती हैं क्योंकि एक ओर कार्यक्षेत्र का कार्य का तनाव तथा दूसरी ओर पारिवारिक दायित्वों की स्थिति का ध्यान रखना अनिवार्य होता है। केन्द्रों में कार्य करने के पश्चात अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होती हैं एक ओर उसका निजी व्यक्तित्व प्रभावित होता है, दूसरी ओर पारिवारिक सम्बन्ध भी प्रभावित होते हैं।

स्वास्थ्य की समस्या : स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार केन्द्रों एवं घर सम्भालने की दोहरी भूमिका के कारणवाश तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है और वह बीमारियों की शिकार होती है। अपने कर्तव्यों का पालन करने के कारण वह स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान नहीं कर पाती है। एसोचैम के सर्वे के अनुसार 78 फीसदी कामकाजी महिलाओं को कोई न कोई लाइफ स्टाइल डिस्ऑर्डर पाये गये हैं। 42 फीसदी को पीठ दर्द, मोटापा, अवसाद, मधुमेह, उच्च रक्तचाप की शिकायत रहती है। इसी सर्वे के अनुसार कामकाजी महिलाओं में हृदय सम्बन्धी रोग का जोखिम रहता है। 83 प्रतिशत महिलायें कार्य की व्यवस्ता के कारण व्यायाम नहीं कर पाती है। 57 फीसदी महिलायें खाने में फल सब्ज़ी का सेवन चित मात्रा में नहीं कर पाती है। डॉ दिशा शुक्ला के अनुसार कार्यरत महिलायें केवल तनाव में ही नहीं होती वरन वह अन्य बीमारियों की चपेट में जल्दी आ जाती हैं।

लैंगिक असमानता : कामकाजी महिलाओं के जीवन में कई प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष बाधक तत्व होते हैं, जो उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न करते हैं, जिसमें लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न आदि सम्मिलित होता है।

पारिवारिक असहयोग : परिवार का सहयोग विभिन्न महिलाओ को पूर्ण रूप से नहीं मिलता है, जिसके कारणवश वह अत्यधिक तनावग्रस्त महसूस करती है। महिलाओ के लिए परिवार का बहुत महत्व होता है। समाज की उनसे अपेक्षाओं का बोझ इतना बढ़ जाता है कि वे अपनी उम्मीदें एवं महत्वकांक्षाएं कम कर लेती हैं। आन्तरिक प्रेरणा हेतु परिवार का सहयोग मातृत्व उनके लिए अत्यन्त आवश्यक होता है। मानदेय की असमानता भी कामकाजी महिलाओं की समस्याओं में निहित है ।

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानूरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेकों उतार चढ़ाव आते रहे हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'', भी दृष्टव्य है। संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ है। महिलाओ को विवाह–विच्छेद परिवार की सम्पत्ति में पुरूषों के समान अधिकार दिये गये हैं परन्तु उसके साथ यह भी सत्य है कि कामकाजी महिलाओ को अपने गुणों के साथ साथ समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। आज भी वह पुरूषों से कन्धा–मिलाकर कार्य कर रही है परन्तु उसे पुरूषों के बराबर अधिकार से वंचित रहना पड़ता है। समेकित बाल विकास योजना माताओं तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए भारत की योजनाओं का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। जिसमें केन्द्रों का संचालन आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा किया जाता है। आंगनबाड़ी केन्द्र बच्चों और माताओं को उनके घर पर ही सेवायें उपलब्ध कराने का केन्द्रीय स्थल होता है। प्रस्तुत शोध आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिकाओं की समस्याओं पर आधारित है।

केन्द्रों में कार्यरत महिलायें : सम्बन्धित बाल विकास योजना के अन्तर्गत आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यकत्रियों को एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में रखा गया है, जो 6 वर्ष तके के उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा स्तनपान कराने वाली महिलाओं को स्वास्थ्य, पोषण एवं शैक्षणिक सेवाओं का एकीकृत पैकेज उपलब्ध करवाती है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अन्तर्गत 1975 में प्रारम्भ की गई योजना के द्वारा आंगनबाड़ी कार्यकत्री केन्द्रों में अपनी सेवायें दे रही है जो केन्द्र में कार्यरत होती है तथा अपनी भूमिकाओं का पालन करती है। आंगनबाड़ी से आशय आँगन आश्रय से होता है, जहाँ नन्हें बच्चे के विकास की पूर्ण ज़िम्मेदरी उसके कन्धों में होती है। इसलिए कार्यकत्री केन्द्रों के माध्यम से बाल विकास महत्वपूर्ण योगदान देती है। महिलायें परिवार का आधार होती है। परिवार एवं समाज की केन्द्रीय परिधि के रूप में महिला की भूमिका समाज में एकता उत्पन्न करने में अत्यधिक प्रभावी रही है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. उत्तरदाताओ ंकी परिवार एवं केन्द्रों के मध्यम समायोजन की स्थिति का अध्ययन करना
2. उत्तरदाताओं के स्वयं के स्वास्थ्य को महसूस करने की स्थिति का अध्ययन करना
3. उत्तरदाताओं के जीवन में हुए लिंग–भेदभाव के सम्बन्ध में मनोवृत्ति
4. केन्द्र में कार्य करने पर सन्तुष्टि का अध्ययन
5. केन्द्र एवं घर के मध्य सन्तुलन बनाये रखने के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

अध्ययन पद्धति : प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु नैनीताल जिले के विकासखण्ड रामनगर में संचालित केन्द्रों की 30 कार्यकत्रियों को यादृच्छित पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु चयनित किया गया है, जिसमें साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन के प्रयोग द्वारा उनकी दोहरी भूमिकाओं की समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक तथ्य के संकलन के लिए पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गई।

प्रस्तुत शोध में उत्तरदाताओं की परिवार एवं केन्द्रों के मध्यम समायोजन की स्थिति का अध्ययन किया गया।

तालिका संख्या – 1
उत्तरदाताओं की परिवार एवं केन्द्रों के मध्य समायोजन की स्थिति के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

क्र. सं.	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अच्छी	08	26.67
2.	बहुत अच्छी	03	10.00
3.	बहुत बुरी	10	33.33
4.	सामान्य	09	30.00
5.	**कुल योग**	**30**	**100.00**

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि 26.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं की परिवार एवं केन्द्रों के मध्य समायोजन की स्थिति अच्छी हैं। 10 प्रतिशत उत्तरदाताओ ंकी पारिवारिक समायोजन की स्थिति बहुत अच्छी है तथा 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं की समायोजन स्थिति बहुत बुरी है तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से दोनों जगह पर समायोजन बनाये रखते हैं।

तालिका संख्या – 2
उत्तरदाताओं के स्वयं के स्वास्थ्य को महसूस करने के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

क्र. सं.	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	समान्यतः स्वस्थ	12	40.00
2.	खराब	10	33.33
3.	अत्यधिक तनावग्रस्त	08	26.67
4.	**कुल योग**	**30**	**100.00**

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाता स्वयं को केन्द्रों में कार्य के दौरान सामान्य रूप से स्वस्थ महसूस करते हैं। 33.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का स्वास्थ्य खराब रहता है तथा 26.67 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो केन्द्रों में कार्य के दौरान अत्यधिक तनावग्रस्त रहते हैं।

तालिका संख्या – 3
उत्तरदाताओं के जीवन में हुये लिंग के आधार पर भेदभाव के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

क्र. सं.	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	22	73.33
2.	नहीं	08	26.67
3.	**कुल योग**	**30**	**100.00**

तालिका संख्या 3 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 73.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को अपने जीवनकाल में किसी न किसी के द्वारा लिंग के आधार पर भेदभाव महसूस किया गया है। अतः 26.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के साथ लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं हुआ है।

तालिका संख्या – 4
उत्तरदाताओं द्वारा केन्द्र में कार्य करने पर स्वयं की सन्तुष्टि के सम्बन्धों में मनोवृत्ति

क्र. सं.	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सन्तुष्ट हैं	07	23.33
2.	थोड़ा बहुत	06	20.00
3.	सन्तुष्ट नहीं हैं	17	56.67
4.	**कुल योग**	**30**	**100.00**

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 23.33 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्रों में कार्य करने पर सन्तुष्ट हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाता थोड़े बहुत सन्तुष्ट हैं तथा 56.67 प्रतिशत उत्तरदाता कार्य करने पर सन्तुष्ट नहीं है। उन पर कार्य बोझ अधिक है।

तालिका संख्या – 5
केन्द्र में कार्य एवं घरेलू कार्य के मध्य सन्तुलन बनाये रखने के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

क्र.सं.	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	06	20.00
2.	थोड़ा बहुत	09	30.00
3.	अत्यधिक कठिन	15	50.00
4.	**कुल योग**	**30**	**100.00**

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 20 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्र एवं घरेलू कार्यों के मध्य सन्तुलन बनाये रखने में सफल होते हैं। 30 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्र एवं घरेलू कार्यों के मध्य थोड़ा बहुत सन्तुलन स्थापित कर पाते हैं। 50 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्र एवं घरेलू कार्यों के मध्य सन्तुलन बनाये रखना अत्यधिक कठिन समझते हैं।

निष्कर्ष : आज के युग में महिलायें भी पुरूषों के समान सामान्य रूप से बाहर निकलकर कार्य कर रही है। इस सभ्य समाज में महिलाओं को अपने कार्यस्थल पर जाना गलत नहीं माना जाता। परन्तु आज भी उन्हें बराबरी का स्थान प्राप्त नहीं है। कामकाजी महिलाओं को घर एवं कार्यस्थल पर दोहरी भूमिका निभानी होती है, जिसके साथ–साथ वह अपने परिवार एवं बच्चों की देखभाल करने में भी पीछे नहीं रहती हैं। 33.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं की परिवार एवं केन्द्रों के मध्य समायोजन की स्थिति अत्यधिक दयनीय पाई गयी है। 33.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को स्वास्थ्य की समस्या बनी रहती है। 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने जीवन में लिंग भेदभाव को किसी न किसी के द्वारा सहन किया है। 56.67 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्रों में कार्य बोझ एवं मानदेय विसंगति के कारणवश सन्तुष्ट नहीं हैं। समाज में लगभग 70 प्रतिशत महिलायें कार्यरत हैं। सक्रमण काल में सामाजिक मनोवृत्तियों, सामाजिक परम्पराओं को छोड़ने की आवश्यकता है। परिवार एवं कार्यस्थल की दोहरी भूमिकाओं का महिला के जीवन पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव पड़ रहा है, जिसके कारणवश उसके स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति प्रभावित होती है। जिसके लिए इस क्षेत्र में कार्य के साथ परिवार एवं समाज के सकारात्मक सहयोग की नितान्त आवश्यकता को महसूस किया गया है। महिलाओं को सुरक्षा एवं सहयोग परिवार, समाज द्वारा प्राप्त होना चाहिए जिसके कारणवश उनकी प्रगति सुनिश्चित की जा सके।

सन्दर्भ सूची :–

"National Policy for the Empowerment of Women (2001)" http://www.nic.in/empwomen.htm.
Afsjar,Heleh : women world and Idealogy in the third world, London Publication (1985)
Government of India : The National Prespective Plan for women, New Delhi 1988
महिला मुक्ति की ओर प्रगतिशील महिला, एकता केन्द्र दिल्ली, प्रोग्रेसिक प्रिंटर्स
पत्रिका 'समन्वित बाल विकास सेवायें', उत्तराखण्ड देहरादून ।
पत्रिका अमर उजाला हल्द्वानी प्रकाशन पब्लिकेशन ।
तेजस्कर पाण्डे ओजस्कार पाण्डे, 'स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र' अनामिका पब्लिशर्स।